13

वर्तमान भारतीय समाज में महिलाओं की चुनौतियां और संघर्ष

डॉ0 मुपेन्द्र कौर

सरांश–

हमारें देश की सभ्यता एंव संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। इसका मुख्य कारण है कि वेद, पुराण, उपनिशद, रामायण आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ में भारत की नारी का प्रमुख स्थान है। नारी के विशय में मनु–स्मृति में भी कहा गया है–**"यत्र नायस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"** इसका अर्थ है कि जहाँ नारी की पूजा आराधना की जाती हैं, वहाँ देवताओं का वास होता है। प्रकार हम कह सकते है कि हमारे देश में नारी का कितना महत्व है। नारी के बिना नर का कोई अस्तित्व नही और नर के बिना नारी का कोई अस्तित्व नही अर्थात दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू है। भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में स्त्रियों महत्वपूर्ण स्थान और सम्मान दिया गया। स्त्रियों को घर की लक्ष्मी कहा गया, जहाँ नारी का सम्मान, मान–मर्यादा नही वह स्थान नरक के समान होता हैं प्राचीन काल में नारी ने महत्वपूर्ण गौरव प्राप्त किया था। वे युद्ध में अपने पति का साथ देती थी। यह भी कहा जाता है कि यज्ञादि, धार्मिक कामों में यदि पत्नी का सहयोग होना उसके महत्व को प्रदर्शित करता है। लेकिन युग बदला और स्त्रियों को पर्दे में रहने के कठोर आदेश दे दिये गये, स्त्रियों को पर्दे में रहना पडता था। इस प्रकार स्त्री पूर्णतः पुरूष पर निर्भर रहने लगी। आज बदलते युग के साथ नारी की स्थिति में भी परिवर्तन हुआ। आज वह प्रत्येक स्थान पर प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही हैं ऐसा परिवर्तन हमारी रूढियों, अन्धविश्वासों व पुरानी परम्पराओं को समाप्त करने से हुआ हैं। वर्तमान समय में नारी पुरूष के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने के लिए तैयार हैं।

मुख्य भाव्द–नायस्तु, पूज्यन्ते, अस्तित्व, प्रदर्शित

प्रस्तावना–प्राचीन समय में स्त्रियाँ काफी शक्तिशाली हुआ करती थीं, परन्तु वक्त बदलने के साथ नारियों की स्थिति में बदलाव हुआ और वों धर की चार दीवारी में कैद हो गयी। स्वत्रन्त्रता प्राप्ति के बाद स्त्रियों की को पुरूषों के समान अधिकार दिये गये। वे आज हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कदम मिलाकर चल रही हैं लेकिन अन्तराष्ट्रीय महिला वर्ष, इंटरनेशनल इयर ऑफ गर्ल चाइल्ड के बाद वर्ष 2001 महिला सशक्तिकरण के रूप में मनाया गया। देश की आजादी के इतने वर्षो के बाद भी संविधान द्वारा दिये गये समानता के अधिकार आज भी महिलाओं को नही दिये गये। संवैधानिक प्रावधानों और कानूनों के बाबजूद महिलाओं के उत्पीडन की घटनाओं की लगातार बढोत्तरी हो रही हैं।

आधुनिक महिला जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं लेकिन इसके बाबजूद वे आज पूरी तरह से स्वतन्त्र नही हैं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार भारत की 24.5 करोड महिलाएँ शिक्षित नही हैं इसके साथ ही 90 प्रतिशत महिलाएँ ऐसी है जिन्हें अपने स्वास्थ्य से संम्बन्धित निर्णय लेने का अधिकार नही है। रिपोर्ट में वर्तमान समय में भी नवजात बच्चियों की हत्या तथा भ्रूण हत्या पर भी बल दिया गया है। पुरूष वर्ग नारी को दासी की संज्ञा देता है। समाज में आज भी सामाजिक दशा काफी दयनीय है। समाज में आज भी जितनी परम्पराएँ, रीति–रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान पाए जाते हैं, वे सब पुरूषों द्वारा निर्मित हैं, इसके पीछे नारी का शोषण छिपा रहता है।

पुरानें समय में भारत में नारियों को उच्च स्थान प्राप्त था। नारियों को सुन्दरता का प्रतीक भी कहा जाता है। जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता का निवास होता हैं वहाँ देवता भी निवास करते हैं। लेकिन धीरे–धीरे नारियों के स्थान में लगातार गिरावट होती गयी। इसके परिणामस्वरूप एक ऐसा दौर आया जव नारियों की सीमा घर की चारदीवारी तक सीमित होकर रह गयी। स्वत्रन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में नारियों की स्थिति काफी अच्छी होने लगी। हमारे देश की नारियाँ आज हर क्षेत्र में पुरूषों की बराबरी करने का हरसम्भव प्रयास कर रही हैं।

नारी की दयनीय स्थिति–भारत की ऐतिहासिक पृष्ठीभूमि में स्त्रियों को महत्वपूर्ण स्थान और सम्मान दिया गया है। शास्त्रों के अनुसार स्त्री गृहलक्ष्मी होमी हैं, जहाँ नारी का सम्मान, मान–मर्यादा नही वह स्थान नरक के समान होता है। प्राचीन काल में नारी ने महत्वपूर्ण गौरव प्राप्त किया था। वे युद्ध में अपने पति का साथ देती थी। इसके अतिरिक्त शास्त्रार्थ, यज्ञादि, धार्मिक कार्यो में भी पत्नी यदि साथ न दे तों वह कार्य अपूर्ण माना जाता है।

समाज में फैली कुरीतियाँ–उस समय समाज में बेमेल–विवाह, सती–प्रथा, बाल–विवाह, पर्दा–प्रथा आदि कुरीतियाँ प्रचलित थी। इसके साथ–साथ एक बाधा आर्थिकता भी हैं इन सब चीजो से बाहर आने के लिए स्त्री के प्रयासों के साथ पुरूष को भी अपनी उदारता के साथ आगे आना चाहिए। विशेश कर वर्तमान में ये सब काफी मश्किल है, क्योंकी आज भी स्त्री आत्म चेतना और सजगता से भरपूर नही है तो आज भी उसके भविष्य पर संकट बना हुआ है। इसके लिए भारतीय नारी को अपने स्वरूप को खुद ही अपनी पहचान बनाने की आवश्यकता है।

नारी की स्थिति में परिवर्तन–अगर महिला शिक्षित होगी तों वह अपने धर की सभी समस्याओं का समाधान आसांनी से कर सकती है। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय विकास में मदद करती है। इसके साथ–साथ आर्थिक विकास और राष्ट्र के सकल धरेलू उत्पादन की वृद्वि में मदद करती है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में भी मदद करती है। कहा भी गया हैकि–**पढी लिखी लडकी रोशनी धर की, एक लडकी पढेगी तो एक धर पढेगा, बेटी**

CamScanner

बचाओं बेटी पढाओं। स्त्री शिक्षा शब्द स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोडने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरूशों के समान शिक्षित करने से है, दूसरे रूप यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धती को सन्दर्भित करता है। मगर अभी ये परिवर्तन संकेतात्मक है। वास्तिविक परिवर्तन लाने में अभी समय लगेगा। सामाजिक सोच के आधार पर स्त्री को अभी भी देह के अलावा स्वीकार नही किया जा रहा है। इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए वर्तमान की स्त्री के पास अगर मजबूत संगठन नही है तो कम से कम उसकी वर्तमान लडाई का एक प्रारूप तो होना चाहिए। इस प्रकार के बदलाव के लिए कोई प्रतिक्रिया अगर घर, परिवार और समाज से शुरू हो तो स्त्री की दुनिया ही बदल सकती है।

आधुनिक भारतीय समाज में नारियों की प्रमुख समस्याएँ–भारतीय समाज में पुरूषों का एकाधिकार हैं। भारत में परम्परात्मक रूप से पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार व्यवस्था का उल्लेख मिलता है जिसमें परिवार के पुरुश सदस्यों को तों अनेक अधिकार एंव सुविधाएँ प्राप्त है, किन्तु स्त्रियों को ये अधिकार प्राप्त नहीं है। संयुक्त परिवार व्यवस्था में स्त्रियाँ दासी की तरह जीवन व्यतीत करती है। उनका जीवन खाना बनानें, बच्चों को जन्म देने, बच्चों की देखभाल करने एंव परिवार के सदस्यों की सेवा में ही बीत जाता हैं। स्त्रियाँ घरेलू हिंसा व मानसिक पीडा का शिकार रहती हैं। परिवार की शान बान के लिए उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य किया जाता है। भारतीय समाज में स्त्री का या तों देवी पूज्नीय या कुल्टा वाला रूप, दोनों में ही उसका मनुष्य रूप धूमिल होता है। इसी मनुश्य रूप को पाने के लिए वह संघर्ष कर रही है। बदलाब की इस सोच के पीछे शिक्षा एक सबसे बडा कारण है। स्त्री शिक्षा के लिए सचेत और जागरूक हो कर उसे पाने का प्रयास करने लगी और उसी प्रयास के आधार पर वह अपने अधिकारों और अपने बजूउ के प्रति जागरूक हो गई।

नारी उत्थान के प्रयास–सरकार ने स्त्री शिक्षा को बढावा देने के लिए अनेक योजना चला रखी है। जगह–जगह बालिका विद्यालय, आवासीय बालिका विद्यालय चला रखे है। पंचवर्शीय योजनाओं के अन्तरगत स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए विशेश ध्यान रखा जाता है। इसके लिए सरकार ने क्षेत्र के विकास कार्यो में स्त्रियों की भागीदारी को बढावा दिया है। स्त्रीयों की आर्थिक स्थिति को स्वतंत्रता एवं स्वावलंबन प्रदान करना। स्त्रियों की स्वास्थ्य सेवा सुधार एवं परिवार कल्याण में अहम् भूमिका तथा शिक्षा प्रशिक्षण के अवसरों को बढावा देकर महिला शिक्षा की राह आसान करना। आकडों के आधार पर देखा जाये तो वर्तमान में भारत में महिला साक्षरता दर पुरूश साक्षरता से काफी कम है। भारत में इनकी साक्षरता दर 65.6 प्रतिशत और विश्व स्तर पर 81.3 प्रतिशत देखी गई है।

विश्व की साक्षरता दर के हिसाब से भारत में महिला साक्षरता दर 79.7 कम मानी गयी है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी स्थिति अधिक गंभीर बनी हुई है। जहाँ लडको की तुलना लडकियों का स्कूल में नामांकन कम है, और ड्राप आऊट संख्या भ लडकों के मुकाबले लडकियों की ज्यादा है। अगर इक्कीसवी सद में भी स्त्री इन सब हकीकतों से कोसो दूर है तो यह विडम्बना ह कही जा सकती है।

निष्कर्ष–यहाँ जो स्त्री का वर्णन किया गया है य स्वतंत्रता भारत में नारी की स्थिति को चित्रित करता है। वर्तमा समय में महिलाओं की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है अब वह धर की चार दीवारी तक ही सीमित नही है, अब वह खुले वातावरण में कही भी कभी भी आ–जा सकती है। आज की स्त्रीय धन कमाने के साथ–साथ समय का सही प्रयोग करना भी जान ग है। आज की स्त्री शारीरिक उन्नती और मानसिक उन्नती दोनो क ध्यान में रख कर आगे बढ रही है। देख जाये तो स्त्री को बराबर और आजादी के लिए इतिहास से ही लडाई, संधर्ष औ कदम–कदम पर चुनौतियों का सामना करना पडा है। आवश्यकत पडने पर स्त्री ने घर और बहार दोनो जगह पर अपनी भूमिका अद की है। बहरहाल स्त्री अपने स्वत्व और अपने वजूद के लिए जिस सादगी के साथ प्रयास और संघंर्श कर रही है, उसके परिणाम दे से ही सही सकारात्मक आवश्य होगे। भले ही यह समग्र रूप से संभव न हो लेकिन छोटे–छोटे टुकडों मे देर से ही सही एक दिश की राह चल रहे है जो एक दिन मंजिल की पर जरूर पहुचेगी।

सन्दर्भ सूची–

1. शुक्ला, डॉ0 सुरेशचन्द्र, शुक्ला डॉ0 अर्चना, भारतीय इतिहास में नारी, शिक्षा ग्रंथागार प्रकाशन, समताकालोनी, रायपुर, पृ 49.53
2. चतुर्वेदी डॉ. मुरलीधर, दू. लां. ए. भारत का संविधान, 1994
3. भारतीय सामाजिक समस्याएद्व रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर, 1999, पृ 2001
4. राठौर, मधु, पंचायतीराज और महिला विकास।
5. कुलश्रेश्ठ रमेशचन्द्र, आदर्श निबन्ध संग्रह, अग्रवाल पब्लिकेशन्स 2012–13, पेज 63–65.
6. सिन्हा आलोक, भारतीय समाज, ग्रीन लीफ पब्लिकेशन्स 2014–15, पेज 93–99.
7. पचौरी गिरीश, प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ .
8. लाल एवं पलोड, शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ.
9. डॉ सुधा बालकृश्णन, स्त्री जागरण की दिशाएँ, नारी : अस्तित्व की पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 69,

डॉ0 भुपेन्द्र कौर,
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)
Pin - 244001
Email:srsingh2472@gmail.com
Mob-9456632300

(RNI-UPBIL/2011/38102, ISSN-2231-5837)
JOURNAL IMPACT FACTOR NO. 7.841